8. ननकू

"का रे ननकूआ, आज इसकूल न जबहीं रे ऽऽऽ?" अम्मा ने पूछा। "न मइया, इसकूल तक नदी के पानी चढ़ अलई हे।" ननकू ने चिल्लाकर कहा। ननकू का स्कूल तो गाँव के सबसे निचले हिस्से में है जहाँ हर साल सावन-भादों में बाढ़ का पानी चढ़ आता है।

वरसात का महीना ननकू को बहुत प्रिय है। आम-जामुन के पेड़ पर चढ़ना और गुल्ली-डंडा खेलना उसे अच्छा लगता है।

हर वार की तरह ननकू अपनी धुन में मस्त, गुल्ली-डंडा उछालता, गाँव की छोटी पगडंडी पर सरपट दौड़ा चला जा रहा था। इतने में उसे आवाज़ सुनाई दी, "ननकू रे ऽऽ अरे ननकू!" उसे लगा कि कोई दूर से पुकार रहा है। पलटकर देखा तो दिदिया हाथ हिला-हिला कर उसे बुला रही थी। ननकू के जी में आया कि वह अनेदखा करके निकल जाए। फिर उसने सोचा कि देख ही आवें, क्या बात है ? वरना मइया से जाकर दस शिकायतें करेगी, जिसमें आधी तो पुरानी होंगी, जिनके लिए कई बार वह झिड़की भी खा चुका होगा। खैर, सोचता हुआ ननकू पास जा पहुँचा। देखा, दिदिया दोनों हाथ में गोबर लपेटे खड़ी है। वह बोली "ननकुआ, हालि से गोइठवा थापा देहीं तो. बड़ी ज़ोर से पानी आवइत हई।"

उसने दीदी को सलाह दी, ''दिदिया रे, गोइठा मत थोप, घाम न निकलतई चार दिन तक फिर सुखतउ कइसे? हमर मान तो, ई सब गोवर मट्टी में गाड़ देहीं, खाद बन जइतउ।'' ननकू ने अपनी उत्तम सलाह पर दिदिया से एक धौल खाया। खैर, इतने सुहावने मौसम में बड़े बेमन से वह गोइठा थापने बैठा।

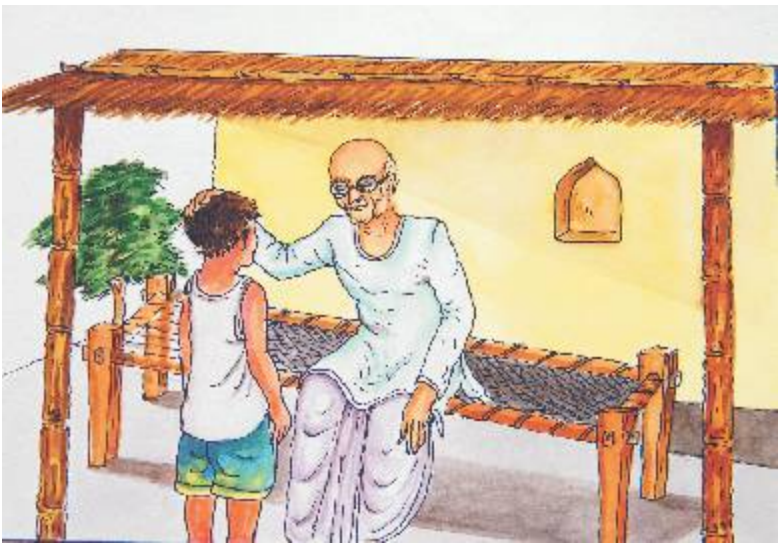

दो-चार ही गोइठा थापा होगा कि टिप-टिप-टिप पानी बरसने लगा। दिदिया गोबर की टोकरी दीवार की ओट में रख आई और हाथ धोने चली गई। ननकू को बुलाकर उसके भी हाथ धुलवाए। फिर बोली, ''सीधे घर जइहे रे, लगहई जोर से पानी पड़तई। बावा निमिया तर बइठल होथीं। जो, चल जो हालि-हालि, समझलें न?''

ननकू अपने घर के सामने नीम के पेड़ तक पहुँच गया जहाँ उसके बाबा खटोले पर बैठे थे। पास जाकर ननकू ने बाबा से कहा, "बाबा! घर में भीतरे चलऽ, जोर से पानी पड़तई।"

"के हई ननकू वचवा? अरे,हम तो केतना देरी से वइठल हली। तू ही तो हमरे बुढ़ापे के लाठी हव, आउर अंधरिया के दीया!" हुलसकर बाबा ने उसे पकड़ लिया और उठने लगे। कुछ दिनों से बाबा को दिखाई नहीं दे रहा था। अम्मा कहती है कि आँख में सफेदी आ गई है। ननकू ने वाबा को घर के अंदर पहुँचा दिया। अव क्या करें, पानी तो जोर से पड़ने लगा। घर से बाहर निकलना मुश्किल।

तभी दादी की आवाज़ आई ''अरे ननकू वचवा, तोर दिदिया आउर अम्मा कहाँ

रह गेलथुन ई बरसात में। ई बार कवन नछत्तर में पानी पड़े लगलई कि छुटते न हई।'' दादी फिर बोली, "अइसन बरसात आउर समुंदर जइसन उफान तो हम कहिनो ना देखले हली।''

ननकू घर से निकलकर और तेज़ी से पीपल के पेड़ की ओर भागा। उसके कई संगी-साथी उधर ही रहते थे। लोग अपना सामान उठाकर झोंपड़ी की छत पर रख रहे थे और गाय-भैंस को शहर जाने वाली सड़क के किनारे बाँध रहे थे, क्योंकि उससे ऊँची जगह और कोई नहीं थी। ननकू ललमुनियाँ की झोपड़ी में घुस गया, देखा उसकी दादी और अम्मा सामान उठाने में लगी हुई थीं। पानी थोड़ा दूर था। ननकू भी उनकी सहायता करने लगा।

सारा सामान उठते-उठाते पानी झोपड़ी के अंदर घुटने तक आ गया। सामान से भरी टोकरी सिर पर रखकर जब वह बाहर निकला तो पाया चारों ओर पानी फैल गया है और बड़ी तेज़ी से उसके घर की तरफ भी बढ़ रहा है। ननकू ने टोकरी सिर पर से उतारकर नीचे रखी और दौड़ पड़ा अपने घर की ओर। दादी देखते ही बोली, ''कहाँ चल गेलहीं हल रे? चल दू कौर माड़-भात खा लेहीं, आउर सामान उठाहीं।''

कोठरी में जाकर ननकू अँधेरे में ही जैसे-तैसे सामान बटोर-बटोर कर टोकरी में रखने लगा। जब टोकरी सिर पर रख बाहर निकला तो देखा कि आँगन में छाती भर पानी चढ़ आया है। दालान में भी घुटने भर पानी है और बाबा खटिया पर खड़े-खड़े चिल्ला रहे हैं। अम्मा, दादी और दिदिया का कहीं पता नहीं था। ननकू ने झट टोकरी पानी में फेंकी और बाबा की तरफ लपका, जल्दी से उनको खटिया से नीचे उतारा।

बाबा बहुत घबराए थे। उन्होंने ननकू से कहा, ''हालि-हालि कर रे बेटवा, चल शहर जाएवाला सड़क पर।''

ननकू दालान के दरवाज़े तक आया, लेकिन यह क्या? उसे लगा कि गाँव में नहीं नदी की बीच धार में खड़ा है वह। अब क्या करे, गाँव का ही पता नहीं था। किसी-किसी के घर का छप्पर भर दिख रहा था। पानी उसकी छाती को छूने लगा था। अब तो आँगन पार कर कोठरी में भी नहीं जा सकता। अब क्या होगा? ननकू को रोना आने लगा। अगर अकेला होता तो शायद ज़ोर-ज़ोर से रोने लगता, लेकिन

बाबा का ध्यान आते ही लगा कि इन पाँच प्राणियों के घर में तो वही एक बहादुर वच्चा है, उसे बाबा को बचाना होगा।

बस, उसने आव देखा न ताव, झट घर के छप्पर पर चढ़ गया। घर दालान से लगा था और उसका छप्पर नीचे पड़ता था, पूरा ज़ोर लगाकर उसने वाबा को ऊपर खींचा। अभी वे लोग ऊपर पहुँचकर सँभले भी न थे कि घर की दीवारें ढह गईं और छप्पर पानी की धार में तिनके-सा बहने लगा। ननकू और बाबा ने छप्पर ज़ोर से पकड़ लिया।

काली बदरी के कारण चारों ओर घुप्प अँधेरा छाया हुआ था। ननकू को कुछ नहीं दिख रहा था। बस, अथाह पानी ही पानी!

फिर अंधेरा कुछ छँटने लगा और ननकू ने देखा कि वह नदी की बीच धारा में बहा जा रहा है। उसके आस-पास टूटे पेड़, झोंपड़ी के छप्पर, आदमी तथा जानवर सब कुछ नदी की धार में बड़े वेग मे बहे जा रहे हैं।

फिर उसे ऊँचे-ऊँचे घर दिखने लगे और वह समझ गया कि वह शहर के पास वह रहा है। शहर को देखकर उसको थोड़ा ढाढ़स बँधा। किनारे पर खड़े लोगों को वह हाथ हिला-हिलाकर इशारा करने लगा। दो-चार लोग नाव लेकर बढ़े भी लेकिन बीच धार तक आना कठिन था। ननकू का छप्पर आगे निकल गया। तभी एक पुल दिखा। पुल पर वहुत सारे लोग खड़े थे। ननकू सोच में डूबा था कि कैसे बचा जाए? तभी उसकी नज़र छप्पर पर पड़ी हुई रस्सी पर गई। ननकू ने झटपट उसका एक सिरा छप्पर के बाँस में बाँधा और चिल्लाकर बोला, "बाबा, कसके पकड़ लिहऽ।"

पुल और पास आ गया। बाढ़ के कारण पुल और जलस्तर के बीच की दूरी कम हो गई थी। जैसे ही वे पुल के नजदीक पहुँचे, ननकू ने रस्सी के दूसरे सिरे को घुमाकर बड़े वेग से ऊपर पुल पर फेंका। पुल पर खड़े लोगों ने उसे थाम लिया। छप्पर एक झटके के साथ पुल के पाये से लगकर रुक गया। जैसे-तैसे ननकू और उसके बाबा को पानी से बाहर निकाला गया।

लोग एक नन्हें बच्चे के साहस और सूझबूझ को बड़े आश्चर्य से देख रहे थे। अब उसने किसी तरह अपने बापू को खोज निकालना चाहा। उसे अपने बापू का पता मालूम था। खोजते-खोजते आखिर उनका झोंपड़ा मिल गया, किंतु वे वहाँ नहीं थे। बाढ़ की खबर सुन कर वे गाँव चले गए थे। बगल में ही जवाहर चाचा का झोंपड़ा था। दोनों जवाहर चाचा के पास गए। उन्होंने खुशी-खुशी उन दोनों को अपने यहाँ ही ठहराया। ननकू और उसके बाबा चार दिन तक वहाँ टिके रहे और जब नदी का पानी उतरने लगा तो ननकू जवाहर चाचा के साथ गाँव की ओर चल पड़ा।

गाँव में अभी भी पानी भरा हुआ था। कितने मानुष-मवेशी बह गए, कुछ पता नहीं। लेकिन ननकू का परिवार पटना जाने वाली सड़क पर अपने प्राण बचा कर सुरक्षित पड़ा हुआ था।

पहले-पहल दिदिया मिली और वह ननकू से लिपट कर रोने लगी। गाँव भर के लोग इकट्ठे हो गए, पर अम्मा?

..... अम्मा कहाँ थीं?

"अम्मा कहाँ हैं?" ननकू के पूछने पर दिदिया को होश आया और उसने इशारे से अम्मा को दिखाया। वे सूनी आँखों से टकटकी लगाए बाढ़ के पानी में न जाने क्या देख रहीं थीं। जब ननकू जाकर उसकी गोद में बैठा तो वह दहाड़ मार कर रोने लगीं।

बाद में ननकू को पता चला कि उसके साहस का समाचार दिल्ली तक पहुँच गया है और 'परसिडेंट' से उसे कुछ इनाम भी मिलने वाला है। ननकू मारे खुशी के झूम उठा। घर-परिवार, गाँव वालों को उस पर गर्व था।

-मंजू मधुकर

शब्दार्थ	
घाम	– धूप
हालि-हालि	– जल्दी-जल्दी
सख्त	– कड़ा
हुलसकर	– प्रसन्न होकर
ढाढ़स	– दिलासा
अदम्य	– प्रबल, प्रचंड
परसिडेंट	– राष्ट्रपति

अभ्यास

किसने कहा, किससे कहा ?

1. बताइए, ये कथन किसने कहा, किससे कहा–

कथन	किसने कहा	किससे कहा
(क) का रे ननकूआ, आज इसकूल न जवहीं रे ऽऽऽ?	----------	----------
(ख) ननकू रे ऽऽऽ अरे ननकू !	----------	----------
(ग) सीधे घर जइहें रे, लगहई जोर से पानी पड़तई।	----------	----------
(घ) बाबा घरबा के भीतर चलऽ, जोर से पानी पड़तई।	----------	----------
(ङ) अरे, हम तो केतना देरी से बइठल हली ।	----------	----------
(च) हमर मान तो, ई सब गोबर मट्टी में गाड़ देहीं। खाद बन जइतउ ।	----------	----------

बातचीत के लिए

1. ननकू गुल्ली-डंडा खेलता था। आप कौन-कौन से खेल खेलते हैं?
2. गुल्ली-डंडा कैसे खेलते हैं? इसमें कितने खिलाड़ी होते हैं?
3. गुल्ली-डंडा खेलते समय क्या- क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?
4. ललमुनियाँ कौन थी? ननकू ने उसके परिवार की क्या सहायता की?
5. ननकू को कब लगा कि अब उसे घर की तरफ जाना चाहिए और क्यों?

पाठ में से

1. ननकू की दीदी ने उसे किस काम के लिए आवाज़ दी?
2. ननकू ने गोबर को मिट्टी में गाड़ने की बात क्यों की?
3. ननकू ने अपनी और दादाजी की जान कैसे बचाई?
4. ननकू की माँ उसे देख क्यों रोने लगी?
5. ननकू के पिताजी कहाँ चले गए थे?

बाढ़ का कहर

1. बाढ़ के कारण ननकू के गाँव में बहुत नुकसान हुआ। बाढ़ के कारण आपके गाँव/शहर में क्या नुकसान होता है?
2. बाढ़ से बचाव या बाढ़ को रोकने के क्या उपाय हो सकते हैं?

अनुमान और कल्पना

1. क्या होता अगर –
   - घर का छप्पर भी पानी में पहले ही बह गया होता?
   - छप्पर के बाँस से बँधी रस्सी टूट जाती?
2. ननकू ने कैसे अनुमान लगाया कि वह शहर के पास से बह रहा है?

आपकी दुनिया

'बरसात का महीना ननकू को बहुत प्रिय है। आम-जामुन के पेड़ पर चढ़ना और गुल्ली-डंडा खेलना अच्छा लगता है।'

1. आपको क्या-क्या पसंद है और क्यों? तालिका में लिखिए –

	पसंद	कारण
महीना		
खेल		
भोजन		
जगह		

2. क्या आपके भाई-बहन, माँ-पिताजी से आपकी शिकायतें करते हैं? ऐसी ही किसी एक घटना के बारे में बताइए।

भाषा के रंग

1. नीचे दिए कथनों को हिंदी भाषा में बोलिए और लिखिए –

(क) न मइया, इसकूल तक नदी के पानी चढ़ अएलइ हे।

(ख) ननकुआ, हालि से गोइठबा थपवा देहीं तो, चड़ी जोर से पानी आवइत हई।

(ग) बाबा नीमिया तर बइठल होथीं ।

(घ) ई वार कवन नछत्तर में पानी पड़े लगलई कि छुटते न हई ।

(ङ) कहाँ चल गेलहीं हल रे? चल दू कौर माड़-भात खा ले, अउर सामान उठाहीं।

---

2. हुलसकर बाबा ने ननकू को पकड़ लिया।
हुलसकर बाबा ने उसे पकड़ लिया।

(क) दूसरे वाक्य में 'उसे' शब्द किसकी जगह आया है? ----------

(ख) 'ननकू' शब्द क्या है? संज्ञा/विशेषण ? सही की निशान (✓) लगाइए।

(ग) **संज्ञा की जगह आने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं।** दूसरे वाक्य में सर्वनाम शब्द कौन-सा है? ----------

(घ) नीचे दिए गए वाक्यों में से सर्वनाम शब्द को छाँटकर लिखिए। यह भी बताइए कि उनका प्रयोग किसके लिए हुआ है?

वाक्य	सर्वनाम शब्द	किसके लिए
• उसके कई संगी-साथी उधर ही रहते थे।	----------	----------
• हम तो केतना देरी से बइठल हली।	----------	----------
• देखा, उसकी दादी और अम्मा सामान उठाने में लगी हैं।	----------	----------
• जल्दी से उनको खटिया से नीचे उतारा।		

6. नीचे दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

(क) आव देखा न ताव – ----------

(ख) टकटकी लगाना – ----------

(ग) दहाड़ मारकर रोना – ----------

(घ) खुशी से झूम उठना – ----------

(ङ) अँधेरे का दीपक होना – ----------

(च) बुढ़ापे की लाठी होना – ----------

कुछ तो खास है

7. **'ननकू' कहानी में कई जगह खास तरह की भाषा/शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनके अर्थ बताइए –**

- घुप्प अँधेरा – ----------
- **झिड़की खाना** – ----------
- धौल खाना – ----------
- **हुलसना** – ----------
- **परसिडेंट** – ----------

आपकी बात

1. **ननकू ने अपने साहस भरे कारनामों से अपनी और दादाजी की जान बचाई।** आप भी किसी ऐसी घटना के बारे में बताएँ जब आपने किसी की जान बचाई हो या किसी ने आपकी जान बचाई हो।

2. **ननकू के साहस भरे कारनामों के बारे में बताते हुए अपने नानाजी या दोस्त** को पत्र लिखिए –

	पोस्ट कार्ड सेवा में, टिकट ---------- ---------- ---------- पिन ☐☐☐☐☐☐